भारतीय समाजवादी चिन्तन

डॉ0 प्रभा गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, विद्यान्त हिन्दू पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

समाजवादी चिन्तन एक आर्थिक व सामाजिक चिन्तन है, जो प्राचीन काल से ही विचार चिन्तन में विद्यमान है, वर्तमान समय में इसे कार्ल मार्क्स द्वारा सैद्धान्तिक रूप से प्रचारित किया गया। यह चिन्तन समाज में सभी व्यक्तियों के न्यायपूर्ण गरिमामय जीवनयापन पर बल देता है। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय भारतीय विचार–चिन्तन पर भी इसका प्रभाव पड़ा। भारत में समाजवादी चिन्तन के प्रणेता आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समय इस विचारधारा का समर्थन कर समाज के वंचित, कृषकों, कामगारों, बुद्धिजीवियों को एकजुट कर उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया गया। तीनों विचारकों द्वारा समाजवादी विचारों में गाँधीवादी विचारों को सम्मिलित कर उसे भारतीय परिवेश के अनुकूल बनाया। राजशाही, जमींदारी, सामंतवाद, पितृसत्ता, जातिप्रथा आदि विभेदकारी प्रवृत्तियों को दूर कर सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए जयप्रकाश नारायण द्वारा सप्तक्रान्ति और लोहिया द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास के लिए चौखम्भा सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया।कृषि पर निर्भर जीवन होने पर कई बार उन्हें कुदरत की मार को भी झेलना पड़ता है। जैसे– वर्षा, ओलावृष्टि, आँधी, तूफान आदि के कारण फसलों को नुकसान हो जाता है और उनकी बोई गयी फसल नष्ट हो जाती है। कई बार तो किसान फसलों को बोने के बाद पानी की कमी से सुखे की मार को भी झेलते हैं। भारत में अधिकांश किसान फसलों के नुकसान को सहन नहीं कर पाते हैं और आत्महत्या भी कर लेते हैं जिससे परिवार के परिवार उजड़ जाते हैं। किसानों को फसलों को काटने तक काफी अधिक मात्रा में नुकसान भी उठाना पड़ता है।

मुख्य शब्द : *समाजवादी, नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, मार्क्स वर्ग, ग्राम*

समाजवादी विचार चिन्तन वर्तमान स्वरूप में पूंजीवाद के विरोध स्वरूप राजनीतिक दर्शन में आया। इसका उद्‌गम प्लेटो के विचारों में मिलता है लेकिन वैज्ञानिक समाजवाद कार्ल मार्क्स द्वारा ही प्रतिपादित किया गया। बुद्ध व कार्ल मार्क्स, सामाजिक क्रान्ति के प्रवर्तक रहे। मूलतः यह एक आर्थिक–सामाजिक दर्शन है जो निजी सम्पत्ति पर आधारित सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संरचना का विरोध करता है। इसके अनुसार राज्य की सम्पूर्ण सम्पदा के उत्पादन और वितरण का अधिकार राज्य के पास होना चाहिए, ताकि समाज के सभी व्यक्तियों को उनकी योग्यतानुसार उत्पादक कार्यों में लगाया जा सके और सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं की न्यायपूर्ण पूर्ति सम्भव हो सके। यह इतनी प्रचलित प्रसिद्ध विचारधारा हुई कि वर्तमान वैश्वीकरण, उदारीकरण, मुक्त बाजार के युग में भी प्रत्येक राष्ट्र अपनी नीतियों में इसकी उद्‌घोषणा करता है, वास्तविक रूप में भले ही उसके कार्य समाजवाद की मूल भावना के विरुद्ध ही क्यों न हों। समाजवाद के प्रमुखतः दो रूप विश्व में परिलक्षित होते हैं– एक विखण्डित सोवियत संघ का सर्वसत्तावादी नियन्त्रण, द्वितीय–अर्थव्यवस्था का राज्य के द्वारा नियमन, जिससे कि कल्याणकारी राज्य की स्थापना हो सके। समाजवाद, समाज में आर्थिक, सामाजिक, एकाधिकार को समाप्त कर सामाजिक नियन्त्रण स्थापित करना चाहता है। समाजवाद के विभिन्न

स्वरूपों को देखते हुए इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा सम्भव नहीं है, चूँकि आन्दोलन और विचार दोनों इसमें समाहित हैं, मूलतः यह आन्दोलन है जिसका लक्ष्य मजदूर वर्गों के हितों को केन्द्रबिन्दु मानते हुए एक वर्गविहीन समाज की स्थापना करना है।

औद्योगिकीकरण, बढ़ते हुए शहरीकरण व पारम्परिक समाज के विघटन के कारण यूरोपीय समाज में परिवर्तन की तीव्र गति की माँग उठी, फलतः मार्क्स और एंजेल का वैज्ञानिक समाजवाद उद्भूत हुआ, जिसके अनुसार समाजवाद का प्रत्येक स्वरूप ऐतिहासिक प्रक्रिया से ही उभरेगा। सोवियत समाजवाद के बढ़ते प्रचार–प्रसार के कारण पूंजीवादी लोकतान्त्रिक राष्ट्रों ने भी लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्वीकार कर समाजवादी राज्य का स्वरूप धारित करने का प्रयत्न किया। समाजवाद का यह प्रारूप द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् तीन दशकों तक प्रभावशाली रूप से चला, लेकिन मन्दी और मुद्रास्फीति, तत्पश्चात् सोवियत संघ के विखण्डन के पश्चात् इस पर प्रश्न उठने लगे कि जिस समानता के उद्देश्य को लेकर इस विचारधारा का प्रसार हुआ, उसमें यह सफल नहीं हुआ अपितु व्यक्ति की स्वतन्त्रता बाधित ही हुई। भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय इस विचारधारा से प्रभावित हुए, आचार्य नरेन्द्रदेव, राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण ने अपने समाजवादी विचारों से भारतीय राजनीति और समाज को प्रभावित किया। भारत में समाजवादी चिन्तन को ज्ञात करने के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव, राममनोहर लोहिया व जयप्रकाश नारायण के विचारों का अध्ययन आवश्यक है।

समाजवादी चिन्तन के भारत में अग्रदूत आचार्य नरेद्रदेव ने अपने समाजवादी विचारों का प्रतिपादन मार्क्स के भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष, वैज्ञानिक, समाजवाद व गाँधी के नैतिकवाद और अहिंसा के मानवतावादी विचारों को सम्मिलित कर तात्कालिक भारतीय परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में किया, ताकि साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय स्वाधीनता संघर्ष को शक्ति प्राप्त हो सके। भारतीय बौद्ध दर्शन का उनके द्वारा गहन अध्ययन किया गया था, क्योंकि उसका अभिमुखीकरण अन्तर्ज्ञानवाद के विरुद्ध था।

आचार्य नरेन्द्र, कार्ल मार्क्स के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे, उनका मत था कि कार्ल मार्क्स के द्वन्द्ववाद सम्बन्धी विचार जीवन के विषय तथ्यों को समझने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। कार्ल मार्क्स की इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या में इतिहास में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी भौतिकवादी पदार्थों की वरीयता के सिद्धान्त की आलोचकों द्वारा आलोचना से नरेन्द्रदेव सहमत नहीं थे, उनके अनुसार इतिहास के विकास में मार्क्स भौतिक पदार्थ और मस्तिष्क दोनों की ही उपादेयता को स्वीकार करता है, आर्थिक कारण महत्त्वपूर्ण है लेकिन परिवर्तन के सर्वेसर्वा कारक नहीं है। मनुष्य की सक्रियता एक आवश्यक कारक है, विचार इतिहास की दशा को तभी प्रभावित करते हैं जब वह तथ्य के रूप में प्रमाणित हो जाये। इस प्रकार कार्ल मार्क्स द्वारा ऐतिहासिक विकास के लिए एक कारक को उत्तरदायी नहीं माना गया है। नरेन्द्रदेव ने विकास के लिए भौतिकवादी शक्तियों के अस्तित्व को स्वीकार किया है और मार्क्स के विचारों की विभिन्न आलोचना के आधारों को स्वीकार नहीं किया है। नरेन्द्रदेव द्वारा असली–नकली समाजवाद में भी अन्तर किया गया है क्योकि हिटलर द्वारा भी अपनी नीतियों को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए 'राष्ट्रीय समाजवाद' का सहारा लिया गया। नरेन्द्रदेव 'बुखारिन' की पुस्तक 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' से भी प्रभावित थे, जिसमें पूंजीपति मजदूर वर्ग के साथ–साथ मध्यम वर्ग, अन्तर्वती वर्ग, मिश्रित वर्ग के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए सामाजिक परिवर्तन में उनकी भूमिका स्वीकार की गई है। सामाजिक परिवर्तन में नौकरशाही की भूमिका को वह

स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। मार्क्स के वर्ग संघर्ष में गाँधीजी के सान्निध्य में आने के पश्चात् भी उनकी आस्था रही, स्वतन्त्रता आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए उल्लिखित विचार में इसके स्पष्ट दर्शन होते हैं। ''देश के विभिन्न वर्गों में तीव्र विभेदीकरण की प्रक्रिया बड़ी द्रुतगति के साथ चल रही है, जिसका प्रभाव उच्च एवं मध्यम वर्गों पर पड़ा है। .....नये वर्गों की रचना हो रही है तथा उसका पृथक्करण आम जनता के साथ हो रहा है.....हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन तरीकों की खोज करे, जिससे राष्ट्रीय संघर्ष में और अधिक तीव्रता आये, जो अभी तक केवल मध्यम वर्ग का आन्दोलन रहा है। मैं समझता हूँ कि ऐसा करने का केवल एकमात्र तरीका यह है कि जनसाधारण को आर्थिक एवं वर्गचेतना के आधार पर संगठित किया जाये, किसी वर्ग को वर्ग चेतना प्रदान करने के केवल दो ही साधन हैं– प्रचार और संगठन।''

इस प्रकार आचार्य नरेन्द्रदेव का विचार था कि देश की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान वर्ग–संघर्ष द्वारा ही सम्भव है, निम्न, मध्यम वर्ग व सामान्य वर्ग के संगठन द्वारा यह सम्भव है, चूँकि समाज को केवल आर्थिक आधार पर ही संगठित किया जा सकता है, अधिकार और लोकतन्त्रीय प्रभुसत्ता के आधार पर नहीं। वह मजदूर वर्ग को क्रान्ति का अग्रदूत व किसानों और बुद्धिजीवियों को उनके सहायक, मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करते थे। उनका मानना था कि सुधारवाद एवं संविधानवाद से क्रान्ति सम्भव नहीं है।

समाजवाद को नरेन्द्रदेव रोटी से जुड़ी विचारधारा स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे, उनका मानना था कि समाजवाद में वे सभी तत्त्व मौजूद हैं जो मानव को विकास के चरमोत्कर्ष तक पहुँचा सकते हैं। उनका मत था कि– ''मानव द्वारा खोजी गयी शासन व्यवस्थाओं में लोकतन्त्र सर्वश्रेष्ठ है, जिसकी स्थापना समाजवाद के मार्ग की पहली मंजिल हैं।'' उनका मानना था कि ''भारतीय समाजवादी आन्दोलन में चित्रित लोकतन्त्र यथार्थ में मध्यम वर्ग का स्वराज्य नहीं होगा, वरन् किसान–मजदूर राज्य होगा।''

स्वतन्त्रता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने कोई अतिवादी समाजवादी दृष्टिकोण को नहीं अपनाया, तात्कालिक परिस्थिति अनुरूप नरेन्द्रदेव द्वारा सभी वर्गों के सहयोग की अपेक्षा की, उन्होंने समाजवादी आन्दोलन और स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोग पर बल दिया, उनका मानना था कि यदि समाजवादी आन्दोलन स्वतन्त्रता आन्दोलन से स्वयं को पृथक करता है तो वह उसके लिए आत्मघाती होगा, उनका मानना था कि ''राजनीतिक स्वतन्त्रता समाजवाद के मार्ग में पहला चरण है।'' अपने इसी विचार दृष्टिकोण से उन्होंने 1942 के कांग्रेस के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का समर्थन किया।

समाजवाद के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने किसान, मजदूर तथा मध्यम वर्ग के गठबन्धन पर बल दिया। किसानों को संगठित करने व उनके अधिकारों की सुरक्षा के हितार्थ के उद्देश्य से उन्होंने 'किसान सभाओं' के निर्माण पर बल दिया, जिसमें सभी श्रेणी के किसानों को सम्मिलित किया जाये। नरेन्द्रदेव स्टालिन के इस विचार से सहमत थे कि किसानों की समाजवादी विचारधारा में आस्था से ही लोकतान्त्रिक आन्दोलन को शक्ति प्राप्त हो सकती है। इसी के साथ वह राष्ट्रीय समस्याओं को किसान समस्या के दृष्टिकोण से नहीं जोड़ना चाहते थे, उनका मत था कि ऐसा करने से 'किसानवाद' का उदय होगा, जिससे ग्राम व शहर के मध्य संघर्ष उत्पन्न होगा, जो राष्ट्र के लिए हितकारी नहीं होगा। गाँवों के विकास के लिए उन्होंने कामगार वर्ग, सहायक किसान और बुद्धिजीवी वर्ग को संगठित कर साम्राज्यवाद एवं पूंजीवाद के विरुद्ध 'नवजीवन आन्दोलन' को संचालित करने की संस्तुति की। आम हड़ताल को भी उद्देश्य प्राप्ति

के लिए नरेन्द्रदेव उत्तम हथियार मानते थे, चूँकि इससे अर्थव्यवस्था पर अंकुश लगाकर विदेशी सत्ता को मजबूर किया जा सकता है, द्वितीय देश व समाज में सांगठनिक शक्ति बढ़ेगी, जो सामाजिक क्रान्ति का आधार तैयार करेगी।

भारत के द्वितीय प्रमुख समाजवादी विचारक जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 में बिहार के सारण जिले के सिताबदियारा में हुआ था। भगवद्गीता, मानवेन्द्रनाथ राय, गाँधीजी के विचारों के साथ–साथ मार्क्स के विचारों ने भी उन्हें प्रभावित किया, लेनिन मार्क्सवाद के विचारों के व्यावहारिक परिणामों से उनका मार्क्सवाद से विश्वास उठ गया। रूस में वोल्शेविक पार्टी के अमानुषिक अत्याचार, चीन का भारत के प्रति विश्वासघात, चीन की तिब्बत के सम्बन्ध में विस्तारवादी नीति के कारण वे साम्यवाद के आलोचक बन गये। साम्यवादियों के इन कृत्यों से उनकी यह धारणा बनी कि साम्यवादी, सत्तावाद और साम्राज्यवाद को बढ़ावा दे रहे हैं और इसके लिए नैतिक और अनैतिक सभी साधनों को अपना रहे हैं।

जयप्रकाश नारायण समाजवाद के लोकतन्त्रीय और मानववादी दृष्टिकोण के समर्थक थे। समाजवाद को वह पाश्चात्य उद्भूत विचार ना मानकर, भारतीय संस्कृति की मूल परम्परा से जुड़ा विचार मानते थे, उनके अनुसार बन्धुत्व, सहयोग, संयुक्त परिवार प्रथा सदैव से ही भारतीय संस्कृति का भाग रहा है। डॉ0 आर0ए0 प्रसाद, जयप्रकाश नारायण के समाजवादी विचारों को तीन चरणों में विभाजित करते हैं, प्रथम–मार्क्सवादी युग, द्वितीय–लोकतान्त्रिक समाजवादी युग, तृतीय–गाँधीवादी युग। 1974 के पश्चात घटित घटनाक्रम में इससे चतुर्थ युग भी जुड़ा– समग्र क्रान्ति।

अपनी प्रसिद्ध कृति 'टुवर्ड्स स्ट्रगल' में जयप्रकाश नारायण समाजवाद को सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का सिद्धान्त मानते हैं, जिसका तात्पर्य है, ''पद, संस्कृति और अवसर की विषमताओं को दूर किया जाये'' यह विचार समानता की धारणा से उत्पन्न होता है, जिसका तात्पर्य सम्पूर्ण समानता नहीं है। उनके युक्तिसंगत विश्लेषण के अनुसार प्राकृतिक दृष्टि से सभी मनुष्य समान नहीं हो सकते, परन्तु सामाजिक आर्थिक क्षेत्रों में विषमता प्राकृतिक, असमानता के परिणामस्वरूप नहीं अपितु 'उत्पादन के साधनों' पर असमानता, पूर्ण नियन्त्रण के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। समाज के सभी वर्गों के आत्मविश्वास के लिए यह आवश्यक है कि इन विषमताओं का अन्त किया जाये, जो केवल घोषणा से सम्भव नहीं है, राज्य के उत्पादन के साधनों का यदि समुचित विभाजन हो तो दरिद्रता, आर्थिक विषमता का अभिशाप दूर हो सकता है। जयप्रकाश नारायण इसके लिए जनसंख्या नियन्त्रण पर भी बल देते थे। उनका मानना था कि मनुष्यों की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना सांस्कृतिक सृजनात्मकता के विकास की कल्पना भी बेमानी है। उत्पादन के साधनों का सामाजीकरण और विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था इसकी प्राथमिक आवश्यकता है, इसके लिए बड़े उत्पादन साधनों का सामूहिक स्वामित्व और नियन्त्रण करना होगा, यथा–भारी परिवहन, जहाजरानी, खनन एवं अन्य भारी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना होगा। कृषि क्षेत्र में परिवर्तन के लिए उन्होंने गाँवों के पुनर्गठन पर बल दिया। वह गाँवों को स्वशासी और आत्मनिर्भर बनाने के पक्ष में थे। भू–सुधार पर भी उनके द्वारा बल दिया गया, जोतों को इकट्ठा कर सहकारी एवं संयुक्त कृषि के वह समर्थक थे। वह सहकारी ऋण, सहकारी बाजार एवं सहकारी उद्योगों को गाँव के विकास के लिए आवश्यक मानते थे, जिससे कि कृषि एवं उद्योगों में सन्तुलन स्थापित किया जा सके। इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वह समाजवादी सरकार की स्थापना का समर्थन करते थे, जब तक भारत पराधीन है, उन्होंने समाजवादी युद्ध को विधानमण्डल में लड़े जाने का समर्थन

किया। समाजवाद के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वतन्त्रता को उन्होंने आवश्यक बताया। परतन्त्र भारत में समाजवाद के लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसी कारण जे0पी0 द्वारा श्रमिकों, किसानों, गरीब, मध्य वर्ग को आर्थिक संघर्ष के लिए संगठित कर राजनीतिक चेतना का विकास कर स्वाधीनता आन्दोलन के लिए तैयार किया।

राजनीति से स्वयं को पृथक करने के पश्चात् जयप्रकाश नारायण सर्वोदय आन्दोलन से जुड़े, जिसके कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने दलविहीन लोकतन्त्रीय प्रणाली का समर्थन किया, ताकि विचारधारात्मक अलगाव इसमें बाधा उत्पन्न न कर सके। जयप्रकाश नारायण का मानना था कि आर्थिक संरचना में सुधार (परिवर्तन) करके ही हम समाजवाद के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते, इसके लिए 'समग्र क्रान्ति' आवश्यक है जिसमें देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक परिदृश्य को पूर्णतः परिवर्तित करने का प्रयत्न करना होगा।

अपने समाजवादी उद्देश्यों (लक्ष्यों) की प्राप्ति के लिए शान्तिपूर्ण लोकतान्त्रिक साधनों पर जे0पी0 पूर्णतः विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि इस पद्धति से उद्देश्य प्राप्ति वहीं सम्भव है जहाँ पूर्णतः राजनीतिक लोकतन्त्र स्थापित हो चुका हो। इसके लिए वह अहिंसक जनआन्दोलन को कारगर साधन मानते हैं, साथ ही हिंसा का वह पूर्णतः विरोध करते हैं, क्योंकि अनुचित साधनों से आदर्श लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव नहीं है। समाजवाद स्थापित करने के लिए दीर्घकालिक विकास और वर्ग संघर्ष को उन्होंने आवश्यक माना है, बुद्धिजीवियों के विचारदर्शन मात्र से यह सम्भव नहीं है, वह केवल मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं, वास्तविक लक्ष्यों की प्राप्ति शोषणविहीन समाज की स्थापना और शोषित वर्ग के वर्ग–संघर्ष द्वारा ही सम्भव है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समाजवादी लक्ष्यों को दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है– वर्ग संघर्ष द्वारा शक्ति प्राप्ति एवं शक्तिशाली समाजवादियों द्वारा समाजवाद की स्थापना। समाजवाद के सर्वोच्च आदर्श लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एशियाई अफ्रीकी राष्ट्रों के संगठन बनाकर सैन्यवाद और सर्वाधिकारवाद के विरुद्ध संगठित होने को जे0पी0 ने आवश्यक माना, तभी विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा सम्भव है।

तृतीय प्रमुख भारतीय समाजवादी चिन्तक डॉ0 राममनोहर लोहिया स्वाधीनता सेनानी और राजनेता थे। उन्होंने अपने समाजवादी विचार गाँधीजी के प्रभाव में एशियाई परिस्थितियों के अनुरूप व्याख्यायित किये। डॉ0 लोहिया द्वारा अपनी महत्त्वपूर्ण रचना 'व्हील ऑफ हिस्ट्री' (इतिहास चक्र) में हीगल और मार्क्स से भिन्न चेतना की भूमिका को आधार मानते हुए 'द्वन्द्वात्मक पद्धति' की व्याख्या की। डॉ0 लोहिया इतिहास के विकास का आधार वर्ग एवं जाति के संघर्ष को स्वीकार करते हैं, जाति जहाँ जड़ शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है एवं समाज में रूढ़िवादिता को प्रश्रय देती है, वहीं इसके विपरीत वर्ग गत्यात्मक (गतिशील) शक्तियों के प्रतीक के रूप में सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि करता है। फलस्वरूप विपरीत वर्ग सामाजिक गतिशीलता की शक्तियों के साथ जातियाँ शिथिल होकर वर्गों में और वर्ग संगठित होकर जातियों में परिवर्तित हो जाते हैं। डॉ0 लोहिया का मानना है कि भारत की लम्बी दासता का इतिहास जाति व्यवस्था का ही परिणाम था, जिसने भारतीय समाज को अन्दर से जर्जर कर दिया, अतः सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी परिवर्तन इसी क्षेत्र में अपेक्षित है।

डॉ0 लोहिया का मत था कि एशियाई राष्ट्रों को अपनी समाजवादी नीति यूरोपीय राष्ट्रों से भिन्न मौलिक समाजवाद के रूप में विकसित करनी चाहिए, क्योंकि यूरोपीय और एशियाई शोषण का इतिहास, राजनैतिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न हैं। एशियाई राष्ट्रों में

निरंकुश तन्त्र और सामन्तवाद से उबरने के पश्चात, सम्प्रदायवाद, राजनीतिक मानसिकता, नौकरशाही एवं तकनीकी तन्त्र, उद्योग प्रबन्ध–तन्त्र के विकास के कारण एक नया वर्ग अस्तित्व में आया है जो जनसमूह का भावनात्मक शोषण कर अपने हितों की पूर्ति में संलग्न है, अतः इन सब बुराइयों के अन्त के लिए एक नये मौलिक समाजवादी दर्शन को विकसित करना होगा, प्राचीन समाजवाद को उन्होंने मृत सिद्धान्त कहा है।

डॉ0 लोहिया द्वारा अपनी चर्चित पुस्तक 'आस्पैक्ट्स ऑफ सोशलिस्ट पॉलिसी' में चतुस्तम्भी (चौखम्भा) राज्य को परिभाषित किया गया है, यह स्तम्भ हैं– गाँव, जनपद, प्रान्त और राष्ट्र। यदि राज्य का गठन इन चारों स्तम्भों के अनुरूप किया जाये तो वह सम्पूर्ण समाज का सच्चा प्रतिनिधि हो जायेगा, जिसमें सभी स्तम्भों का महत्त्व बना रहेगा और उन्हें एक कार्यमूलक संघवाद की व्यवस्था के अन्तर्गत एकीकृत कर एक सूत्र में बाँधा जा सकेगा। 'चौखम्भा राज्य'' में डॉ0 लोहिया जिलाधिकारी पद के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि यह पद शक्ति के केन्द्रीकरण का प्रतीक है, वे पुलिस और कल्याणकारी कार्य गाँव और नगर पंचायतों द्वारा सम्भालने के पक्ष में थे, आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण और बेरोजगारी की समस्या को सुलझाने के लिए छोटी–छोटी मशीनों पर आधारित कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने के पक्ष में लोहिया जी थे।

समाजवाद की स्थापना के लिए डॉ0 लोहिया ने प्रजातन्त्र का समर्थन किया है, लेकिन प्रचलित प्रजातन्त्र, जिसमें आम जनमानस मताधिकार तक ही सीमित है, को वह उचित नहीं समझते थे। प्रजातन्त्र का उद्देश्य नागरिक स्वतन्त्रताओं की विस्तृत व्यवस्था एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं में जनसहभागिता है, जिससे कि नागरिक अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज उठा सकें। लोकतन्त्र निर्वाचन, सरकार, संसद तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, अपितु वह इसे जीवन पद्धति के रूप में अपनाने के पक्ष में थे। संसदीय लोकतन्त्र की अपेक्षा डॉ0 लोहिया ने विकेन्द्रीकृत व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया है, क्योंकि यह चौखम्भा राज्य की परिकल्पना को साकार करेगी। विकेन्द्रीकृत व्यवस्था लोकतन्त्र और समाजवाद दोनों की प्रस्थापना में लाभकारी सिद्ध होगी, इसमें मानव अधिकारों का संरक्षण, राजनीतिक सहभागिता इस व्यवस्था में स्थापित होंगे जो सच्चे लोकतन्त्र को स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

संघ व्यवस्था को डॉ0 लोहिया विकेन्द्रीकरण का विकल्प नहीं मानते थे, उनका मत था कि यह विभाजन केवल प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से उचित है, लेकिन शासन में नागरिकों की सहभागिता इससे सुनिश्चित नहीं होती है। नागरिकों की दिन–प्रतिदिन की राजनीतिक सहभागिता के विचार को वर्तमान में इस आधार पर अस्वीकार किया जाता है कि यह आज के विशाल राष्ट्रीय राज्यों में सम्भव नहीं है, दूसरे अनेक शासनिक, तकनीकी कार्यों से जनता अनभिज्ञ है अतः प्रतिनिधित्व प्रणाली ही इसका विकल्प है, परन्तु डॉ0 लोहिया का विश्वास था कि निस्पृह भाव से विकेन्द्रीकरण की नीति अपनाकर 'चौखम्भा राज्य' की योजना को क्रियान्वित कर लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

डॉ0 लोहिया अपने समाजवाद को केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे, अपितु मानव समाज से सम्बन्धित प्रत्येक अन्याय को समाप्त करना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने 'सप्तक्रान्ति' का विचार प्रस्तुत किया, यथा–आर्थिक अन्याय, जातिप्रथा, स्त्रियों के प्रति भेदभाव, साम्राज्यवाद, रंगभेद, समष्टि के व्यक्तिगत अधिकारों के अतिक्रमण, अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा के सिद्धान्त को राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करने के

लिए व्यक्तियों के वैचारिक दृष्टिकोण में क्रान्ति करने पर बल दिया।

प्रमुख भारतीय समाजवादी विचारकों के चिन्तन के विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तीनों विचारकों ने मार्क्सवाद व लेनिनवाद में गाँधीवादी विचारों का सम्मिश्रण कर देश की सभ्यता एवं संस्कृति के अनुकूल संश्लिष्ट समाजवादी विचारधारा प्रस्तुत की है। तीनों विचारकों द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन व समाजवादी आन्दोलन को समन्वित कर राष्ट्रवाद और समाजवाद में सामंजस्य स्थापित कर विदेशी सत्ता एवं सामन्तवादी दोनों प्रकार के शोषण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयोग कर समाजवाद के मानववादी पक्ष को स्थान दिया है। नरेन्द्रदेव सहकारिता पर आधारित वर्गविहीन समाज की स्थापना के पक्षधर थे, वहीं जे0पी0 ने दलविहीन वर्चस्व का समर्थन किया है। मार्क्सवादी क्रान्ति केवल औद्योगिक मजदूरों की क्रान्ति है, वहीं नरेन्ददेव द्वारा इसमें कामगारों, कृषकों, बुद्धिजीवियों को भी सम्मिलित किया है। जे0पी0 ने समाजवाद का प्रयोग भौतिक आवश्यकताओं के साथ आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी किया है, उन्होंने परिवर्तन के लिए वर्ग संघर्ष से अधिक सर्वोदय की नीति को वरीयता दी है, उनका मानना था कि आर्थिक उत्पादन प्रणाली में क्रान्ति करके पूर्ण संरचना में परिवर्तन सम्भव है। लोहिया भारत में उग्र समाजवादी के रूप में विख्यात है, उन्होंने समाजवाद के विस्तृत दृष्टिकोण को अपनाते हुए इसके दक्षिण एशियाई सन्दर्भ में नीति निर्माण की संस्तुति की है, उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को भी विकास में बाधक माना है। इसी के साथ राजनीतिक आर्थिक विकेन्द्रीकरण के लिए गाँधीवादी संगठन का समर्थन किया है। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय समाजवादी विचारकों द्वारा समाजवाद के किसी प्रचलित सैद्धान्तिक दृष्टिकोण का अनुगमन न करके उसे भारतीय सन्दर्भों में व्याख्यायित करके उसकी प्रस्तुति की है। अविकसित अर्थतन्त्र में किसानों की भूमिका, वर्ग संघर्ष एवं नियोजन जैसी समस्याओं पर उनके द्वारा गम्भीर चिन्तन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अवस्थी डॉ0 अमरेश्वर, अवस्थी डॉ0 रामकुमार, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002
2. कमल डॉ0 के0एल0, समाजवादी चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2008
3. गाबा ओमप्रकाश, भारतीय राजनीतिक चिन्तक, नेषनल पेपर बैक्स, दिल्ली, 2016
4. दीक्षित जगदीश चन्द्र, आचार्य नरेन्द्रदेव, अशोक प्रियदर्शी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, 1989
5. नागर डॉ0 पुरुषोत्तम, भारतीय राजनीतिक विचारक, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1989
6. वर्मा डॉ0 श्रीराम, भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक सेन्टर, जयपुर, 2017
7. वर्मा डॉ0 वी0पी0, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2009
8. शर्मा योगेन्द्र कुमार, भारतीय राजनीतिक विचारक, भाग–2, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001